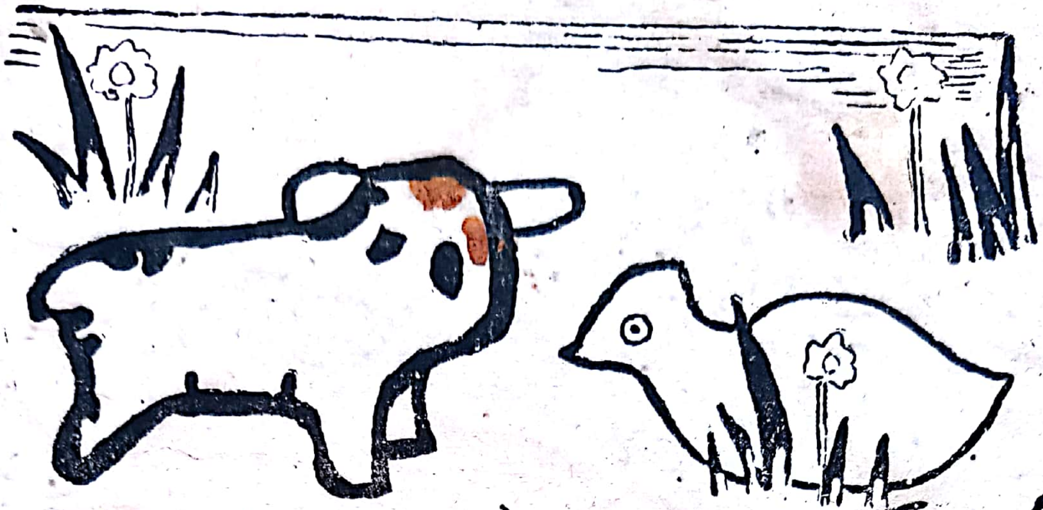


कहा कहे कहानी

झोती रानी

•

[रोचक बाल-कथा]

लेखक

प्रो० श्रीरामदेव झा
एम. ए.

•

प्रकाशक

'बटुक' कार्यालय
१ एलनगंज रोड, इलाहाबाद–२

प्र० संस्करण] १९६७ ई० [मू० २५ पईसा



इजोती रानी

प्रो०

श्रीरामदेवझा

'बटुक' कार्यालय, १ एलनगंज रोड, इलाहाबाद–२

इजोती रानी

[संयुक्ताक्षर रहित मैथिलीक रोचक कथा]

सन् १९७१ साल • प्रथम संस्करण

मूल्य • ५० पइसा

IJOTI RANI (Story)

By

Prof. RAMDEO JHA

•

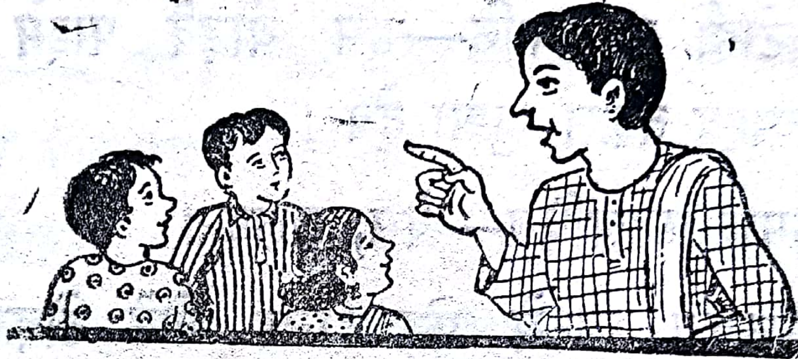
प्रकाशक
'बटुक' कार्यालय
१ एलनगंज रोड,
इलाहाबाद-२

मुद्रक
पन्नालाल सोनकर
राष्ट्रीय मुद्रणालय
५ सम्मेलन मार्ग
इलाहाबाद

First edition • 1965 • Price 50 Paise

रामदेव झा

ऊँबाककाक कथा



इजोती रानी

[प्रोफेसर श्रीरामदेवझा, दरभंगा]

एकटा रहथि राजा। हुनक छोटका बेटा बड़ टिरु-साह। एक दिन ओ अपना भाउजि सँ खाए लए मङल-थिन्ह। थारी परसिकऽ अनबामे कनेक देरी भऽ गेलइ, बस राजकुमार रूसि रहल। भाउजि ताहि पर कहलथिन्ह जे—एहन जँ मानवला छी तँ इजोतिए रानीसँ बिआह कऽ लिअऽ ने, तँ देखू।

राजकुमारकेँ भाउजिक ई बात लागि गेलनि ओ तखन उठि कऽ विदा भऽ गेलाह इजोती रानी केर उदेस मे।

भूखल पिआसल राजकुमार चल जाइत रहथि की बाट मे एक गोटे टोकलकनि—औ बटोही ! हमरा संग-नेने चलब ?

राजकुमार कहलथिन—तोरामे कोन एहन गून छह जे हम नेने चलिअह ?

ओ बटोही कहलकनि—हम थोड़बे पाइमे जतेक गोटे खाय चाहब तकरा खुआ देब ।

राजकुमार कहलथिन—बेस, चलह ।

जाइत-जाइत बाटमे फेर दोसर गोटे टोकलकनि । ओकर गुन छलइ जे कतबो खा लैत छल तैओ अछों नहि होइत छलैक । राजकुमार ओकरो संग लऽ लेलनि ।

चलैत-चलैत बाटमे तेसर गोटे भेटलनि जकर गुन छलइ जे ओ कुड़ुर करऽ लगैत छल तँ ओहिसँ बाढ़ि आबि जाइत छलैक । राजकुमार ओकरो संग कऽ लेलनि ।

आब चारू गोटे विदा भेलाह इजोती रानीक उदेस मे । बाटतँ रहैक सुन-सान, लोक रहैक नहि जकरा सँ पुछितथिन । एकटा कुटी भेंटलनि जाहिमे एकटा साधु छल जप करैत । राजकुमार कतेक बेर ने इजोती रानीक राजक बाट पुछलथिन । साधु कोनो उत्तर नहि देलकनि । खाली एतबे कहलकनि जे—रातिमे ।

निराश भऽ कऽ चारू गोटे आगाँ बढ़लाह। होइत होइत साँझ पड़ि गेलैक। चारू बटोही डरा गेलाह जे आब की हैत एहि वन-खंड मे! मुदा, अनहार हैबाक बदला मे इजोत बढ़ऽ लगलैक। हिनका सब केँ भेलनि जे चान उगि रहल अछि। मुदा बड़ी काल धरि पूब दिस तकैत रहलाह तैओ चान नहिं उगल। ओ सभ गाछ पर चढ़ि कऽ देखलनि तैओ चान नहि देखि पड़लनि। दिने जकाँ इजोत भऽ गेलैक मुदा आकाश मे तरेगन सब खूब। राजकुमार केँ साधुक बात मोन पड़ि गेलनि। किछु ओकर कारण नहि बूझि सकलाह।

ई बात तँ बुझले ने रहनि जे इजोती रानी के अछि, केहन अछि, कतऽ रहैत अछि, ओकर की गुन छैक, ओकरा सँ कोना परिचय करताह। ओ तँ मौजीक बात पर उठि ठाढ़ भेलाह आ' विदा भऽ गेलाह। आब करताह तँ की करताह। फेर चारू गोटे विचारलनि जे इजोत अछिए तँ आगू बढ़ल जाय। से सब गोटा एक मत भऽ कऽ चललाह।

चलल जाथि। जँ जँ आगाँ जाथि तँ तँ आरो इजोत बढ़िते जाइत छल। होइत-होइत इजोत आरो तेजे होइत गेलैक। चारूगोटे केँ आँखि तकले ने जाइत छलैन्हि। चारूगोटे फेर विचारए लागल जे की करबाक चाही तावद्

भोर भिनसर भऽ गेलैक। ओ सब इजोती रानीक राज मे पहुँचि गेलाह।

ओहि राज मे गेलाक बाद पता चललनि जे इजोती रानी ओहि ठामक राजाक बेटी थिकैक। ओ किछु खाइत नहि छलि ओकरा सौंसे देह सँ इजोत बहराइत रहैत छलैक। बारह योजन धरिक लोक ओही इजोत मे अपन सब काज करैत छल। ककरो अपना घर मे साँझ-बाती देमऽ नहि पड़ैत छलैक।

राजकुमार ई सब बूझि-सूझि भोजन-भातक ओरिआन मे लगलाह। तावत हुनक पहिल संगी बजा कऽ हुनका सबके ओहि राजक बड़का दोकान मे लऽ गेलनि। चारूगोटें मोन भरि खयलनि। जखन दोकानदार पाइ माङऽ अयलनि तँ पहिल संगी बाजल—एँ हौ, हमर राजकुमार इजोती रानी सँ बिआह करताह, तकरा सँ तो पाइ लेबह?

आब के हुनका सब सँ पाइ मङैत अछि। ओ तँ दौड़ल राजा कें समाद कहबा लय जे चारिटा बटोही एहि राज मे आबि कऽ ढीठ भऽ कऽ कहैत अछि इजोती रानी सँ बिआह करब।

राजा तँ सुनिते तमसा गेलाह। आँखि लाल भऽ गेलनि। सेना कें हुकुम देलनि। हथियार सँ लैस भऽ

कऽ हाथी घोड़ा आ' सेना सब चलल। पाछाँ पाछाँ राजा सेहो चललाह।

एमहर राजकुमार देखलनि जे आब जान बाँचब कठिन अछि। ओ सोचमे पड़ि गेलाह। ओमहर राजा केर सेना आरो लगे अबैत जाइत छल। तावत राजकुमार कें अपन संगीपर नजरि गेलनि। कहलथिन—इआर आब अपन गुन देखाउ।

ओ संगी कुड़ुर करऽ लागल। से ततेक जोरसँ बाढ़ि आबि गेल जे राजाक सब सेना उबडुब करऽ लागल। कतेक ओहिमे सँ दहा-भसिआ गेल। राजा अपनो डूबऽ लगलाह। ताड़-बाँस एतेक पानि आबि गेल। ओ लोकनि आब कोना उबरताह? राजा आब राजकुमारक विनती करऽ लगलाह।

राजकुमार कहलथिन जे इजोती रानीकेँ हमरासँ बिआहि दी तँ हम बाढ़िकेँ रोकि देब।

राजाक अक-बक किछु नहि चललनि। ओ कहलनि—बेश, हम मानि लेलहुँ अहाँक बात।

राजकुमार अपन कुड़ुरवला संगी के मना कयलनि आओर बाढ़ि कम भऽ गेल। राजा ओ हुनक सेना, हाथी घोड़ाक असवार, राजपाट सब उबरि गेलनि।



Scanned by CamScanner

राजकुमार लग आबिकऽ राजा कहलथिन जे राज-महलक कोन मे एक भड़ार अछि जाहिमे इजोती रानीक बिआह क बरियाती सभहक लेल भोजन-छाजनक चीज वस्तु, मधुर, अँचार आदि राखल अचि। से जँ वर दिसक लोक सठा देत तखने अहाँ इजोती रानी लग जा सकब। ने तँ ओकर इजोतमे ककरो आँखि नहि ठहरत।

राजकुमार कहलथिन—'वेश'। ओ अपन खाधुर यारकेँ इसारा कएलथिन। सब गोटे खाइ लए बैसलाह। तीन गोटे तँ खा कऽ ऊठि गेलाह। मुदा खाधुर यार खाइते रहि गेल। खाइत खाइत राजाक अपनो परिवारक भोजन सब खा गेल। तैओ ओकर पेट खालिए रहलैक। राजा सोचमे पड़ि गेलाह। पाहुनकेँ आब खाय लेल की दिऔक? तखन ओ राजकुमारकेँ निहोरा कएलथिन जे आब अपन झाझट समटू। राजकुमार अपन खाधुर संगीकेँ कहलथिन—"की हौ पेटू! एखन धरि तोहर धोधरि नहि भरलह?"

बस ओकर पेट भरि गेलैक आओर ओ उठि गेल। राजा हारि-दारि कऽ मानि लेलथिन राजकुमारक बात आओर नीक दिन तका कऽ बिआह करबाक वचन देलथिन। बचन दैते देरी इजोती रानीक देह सँ जे इजोत बहार होइत छलैक

से खतम भऽ गेलैक। सौंसे अनहार भऽ गेलैक। लोक हाहाकार कऽ उठल। मुदा आब हो की ?

राजकुमार तँ अपन परिचय देलथिन नहि। राजाकेँ भेलनि जे ई के थीक, कोन जातिक ने थीक ? ओ राजकुमार आओर इजोती रानीकेँ विआह कऽ विदा कऽ देलथिन। वर-विदाइ किछु ने देलथिन। बस दूनू गोटा अपना जान सँ विदा भेलाह।

इजोती रानी तँ आब ओ इजोती रानी छलीह नहि। जखन भड़ारक भोजन सठि गेलैक तखने सँ भूख बूझि पड़ैत छलनि मुदा ओ आब रानी जकाँ बूझाइत नहि छलीह। आब जखन थाकनि भेलनि, रौद-वसात मे चलऽ पड़लनि तँ भूख आरो तेज भऽ गेलनि। जखन अपना बापक राजक सीमाकेँ पार करितथि तखन भेलनि जे आब तँ ई देश-कोस देखब नहि तेँ माय बापक राजमे आखरी बेर किछु पानिओ पीबि ली। चलल नहि जाइत रहनि। ओ लटुआ कऽ गाछतर बैसि रहलीह। राजकुमार सेहो भूखेँ-पिआसेँ लबा-लोट भेल जाइत रहथि। लगमे तँ किछु रहनि नहि जे कीनि बेसाहि कऽ खैतथि। आब की करथु ?

तखन इजोती रानीकेँ अपना आङ्गुर पर नजरि गेलनि। एकटा औंठी छलनि। से बहार कऽ राजकुमार

केँ देलथिन। कहलथिन जे बजार मे एकरा बेचि कऽ, किछु बेसाहि लाउ।'

इजोती रानी ओहि बजारक सभ बनिञाकेँ जनैत छलथिन। राजकुमार केँ चेता देलथिन जे "ककरो ओतय जाइ तऽ जाइ मुदा नगरक काते मे सब सँ पहिने जे कनहा सोनार भेटत तकरा ओहिठाम नहि जायब आ ओर विना दाम लेने पहिने औंठी नहि देबैक।"

इजोती रानी ओहीठाम रहलीह आ ओर राजकुमार विदा भेलाह। संयोग सँ ओ ओही कनहा सोनारक ओहि-ठाम भुतिआ कऽ चल गेलाह। ओ तँ औंठी देखिते बूझि गेल जे इजोती रानीक औंठी थीक। ओ राजकुमार केँ बात मे बझा देलक। ओमहर अपन दू तीन आदमी केँ इजोती रानी केँ फुसिआ कऽ आनइ लय पठा देलक। ओ जा कऽ इजोती रानी केँ कहलकनि जे राजकुमार बजबैत अछि।

इजोती रानी नहि तैयार भेलथिन। कहलथिन जे "राजकुमार अपने औताह तखने जाएब।"

कनहा सोनार बड़ चलाक छल। राजकुमारक हाथसँ औंठी लऽ कऽ मोल-भाव करऽ लागल। ओमहर ओ औंठी फेर अपना आदमी केँ दऽ कऽ इजोती रानी केँ

आनऽ पठा देलक। ओ आदमी इजोती रानी कें ओ औंठी देखा कऽ कहलकनि जे "देखू यैह औंठी दऽ कऽ राजकुमार जहाँ कें बजा पठौलनि अछि।"

आब इजोती रानी कें किछु फुरबे ने करैनि। ओ विदा भऽ गेलीह। एमहर राजकुमार सँ मोल तोल चलैत छल आ' ओमहर इजोती रानी कें दोसर कोठली में राखि ताला लगा देलकनि। कनहा सोनार जखन ई बूझि गेल तखन रूपैयाक तोड़ राजकुमार क आँगा खोलि देलक आओर बाजल—"जे लेब से लऽ लिअऽ"।

काज जोगर रूपैया लऽ कऽ राजकुमार अयलाह तँ आहि रे बा। इजोती रानी तँ छथिए ने। ओ रूपैया ओहिठाम छीटि देलनि। ओ बताह भऽ कऽ बौआय लगलाह—बेरि बेरि चिकरि उठथि—

इजोती रानी एतइ छलीह।
हम कानी ओ कतऽ गेलीह॥

एमहर ओ कनहा सोनार चाहलक जे इजोती रानी सँ विआह करी। मुदा इजोती रानी एकटा उपाय सोच-लनि। ओ कहलथिन जे "हम बारह दिन निराहार रहि कऽ डाला भरि फूल सँ गौरी क पूजा करब। गौरीक पूजा

लय एकदिन जाहि गाछ सँ फूल तोड़ल जाए दोसर दिन ओहि गाछ सँ फेर फूल नहि तोड़ल जाए ई कामना पूर भेला पर हम विआह करब।"

कनहा पड़ले पओलक। ओ बाजल जे मार। ात छैक।"

फूल आबऽ लागल। गौरी पूजा होमऽ लागल। इजोती रानी सब दिन खिड़कीपर बैसिकऽ राजकुमारक बाट ताकथि। ओ राजकुमारकेँ बताह-भेल "इजोती रानी। इजोती रानी।" कहैत बौआइत देखथिन। ई लाख इसारा करथिन, चुटकी बजबथिन, उकासी करथिन जे कहुना राजकुमार माथ उठा कऽ ऊपर ताकथि। बाहर मे रहनि ताला लागल तेँ बाहर भ' नहि सकैत छलीह।

होइत होइत एगारह दिन बीति गेल। बारहम दिन इजोती रानी केँ सोच होमऽ लगलनि जे आब की करी आइ कनहा मानत नहि। बलजोरी बिआह कइए लेत। इजोती रानीक आँखिसँ दहो-बहो नोर चल जाइत रहनि। साँझ होइमे कनेके समय बाँकी छलैक जकरा बाद कनहा आबि कऽके बाड़ खोलितनि। एतबे मे राजकुमार बताह बनल खिड़कीक नीचाँसँ चल जाइत रहथि। इजोती रानी छटपटा कऽ रहि गेलीह मुदा राजकुमार हुनका दिस नहि

तकलथिन तखन हारि दारि कऽ इजोती रानी मन्त्रक बलें अपन शरीर कें खूब छोट माँछी सन बनाकए एकटा सुन्दर गुलाबक फूलमे बैसि गेलीह आ' राजकुमारक पएरपर खिड़की बाटें खसि पड़लीह ।

इजोती रानी समा गेलीह फूल मे । कोठली भऽ गेल सुनसान । साँझक बेर मे कनहा सोनार पुलकित मोनें आबि कऽ केवाड़ खोललक । इजोती रानी कें नहि देखि ओकरो मति फीरि गेलैक । ओहो बताह भए कए बौ-आय लागल । बौआइत कालमे बजैत रहए—

"कोठली मे गौरी पूजय गेलीह ।
इजोती रानी कतय गेलीह ।।"

आब नगर मे इजोती रानी क नाम जपैत दुइटा बताह लोक बौआय लागल—राजकुमार आओर सोनरवा ।

एमहर ओ फूल राजकुमारक आँगा मे खसल । सौंसे सुगन्धि सँ मह-मह कऽ ऊठल । राजकुमारक मोनमे भेलनि जे ई फूल उठा ली । मुदा फेर सोचलनि जे "ओहन रूपवती इजोती रानी जखन चल गेलीह तखन ई फूल लऽ कऽ की हएत ? ककरा देबैक ? के लेत हुलसि कऽ ?"

ई सब गुनि-धुनि कऽ ओ आँगा बढ़ि गेलाह। फूल ओहिना रहि गेल। तावत काल मे ओही बाट धयने चारि टा चोर चल जाइत रहय। एकटा चोरक नजरि संजोग सँ ओहि गुलाबक फूलपर पड़ि गेलैक। ओ उठा लेलक ओकरा। चारू चोर जाइत जाइत एकटा गाछतर जा कऽ सूति रहल। सिरमामे ओहि फूलकें राखि देलक। इजोती रानी तँ दैवक फेरीमे पड़ि गेलीह। ओ जखन देखलनि जे चोर सब फोंफ कटैत अछि तखन ओ फेर लोक बनि गेलीह। ओहिठाम सँ पड़यबाक लेल जहिना पएर उठबैत छथि कि चारू चोरक आँखि फूजि गेलैक। ओ सब जागि गेल। इजोती रानी चट घोघ तानि कऽ ओहीठाम बैसि गेलीह।

चारू चोरबा सभ हिनका देखि कऽ अपनामे झगड़ा करऽ लागल जे हम बिआह करब तँ हम बिआह करब। ओ सब अपनामे मारि पीट करबा लय सेहो तैयार भऽ गेल। इजोती रानी मोनमे सोचलनि जे ई कतउ किछु कऽ ने बैसय। तैं कहलथिन जे एकटा तीर-धनुष लाउ। हम तीरकें जुमा कऽ फेकैत छी। जे गोटे ओहि तीरकें पहिने लऽ आनब, हम तकरे संग बिआह करब।

सब चोरकें ई मंजूर भए गेलैक। तीर-धनुष आनल गेल। इजोती रानी खूब जुमाकऽ तीर फेकलनि। चारू

Scanned by CamScanner

चोर दौड़ल ओकरा पाँछा, तीर आनइ लय। सभ एक सूरि सँ दौड़ल जाइत छल, पाछू घूरि कें के ककरा तकैत अछि ?

ओहि गाछक लगे मे छलैक एकटा इनार। खूब गहीरं। इजोती रानी फुरती सँ धनुष इनारक लहरा पर राखि देलथिन आओर अपने पड़ा गेलीह।

थोड़े क काल मे चारू चोर तीर कें घेने भिक भोड़ी करैत आएल। इजोती रानीकें ओहिठाम नहि देखलक। ओ सब चारू कात हुनका ताकऽ लागल। गाछक लग इनार तक गेल। ओतय लहरा पर धनुषकें राखल देखि कऽ सब सोचलक जे इजोती रानी एही अथाह पानिवला गहीर न.रमे डूबि गेलीह। ओ चारू चोर सेहो बताह भए गेल। ओ सब पढ़य लागल—

"अताल-पताल मे कुइआ क पानी।
डूबि गेलीह हमर इजोती रानी॥"

आब तऽ नगर मे छौ.टा बताह घूमय लागल।

इजोती रानी चोर सबकें तीरक पाँछा दौड़ा कऽ बड़ बुधिआरी कैलनि। ओ लहरा पर धनुष राखि कऽ पड़ा लीह। भागल—ओ बहुत दूर चल गेलीह। एक ठाम

आबि कऽ एकटा गाछ तर छाहरि मे दम धरऽ लगलीह। ठंडा बसात बहैत रहैक। थाकल रहबे करथि। अलसा गेलीह। आँखि लागि गेलनि। ओही बाटे कोनो हजाम कमा कऽ अबैत छल। ओ इजोती रानी सन रूपवती कनिआ कें देखि सोचलक जे ठकि फुसिआ कऽ एकरासँ बिआह कऽ ली।

ओ इजोती रानीक पैर जाँतऽ लागल। इजोती रानी चेहा कऽ ऊठि बैसलीह। हजमा कें देखिते बूझि गेलीह जे फेर कोनो नीच लोकक पालाँमे पड़ि गेलहुँ।

हजमा हुनका ममता देखबैत कहलकनि—"आहा हा! अहाँ सन कोमल लोक कतउ एना चलय रौदमे? हमरा संग हमरा घर पर चलू। हम अहाँ कें खूब नीक जकाँ राखब। अहाँ सुखसँ रहब। अहाँ कें हम रानी जकाँ अपन कनिआ बना कऽ राखब।"

इजोती रानी सोचलनि जे ई नौआ अछि मकड़ाक जाल। ओना ई जान नहि छोड़त। ओ कहलथिन—"हँ, हँ हम चलब तऽ अहींक संग। मुदा हमरा तऽ आब चलल नहि होइत अछि। कतेक दिन सँ उपवासे क' रहल छी। अहाँ बजार जाउ आओर बारह बरखक पुरान कनकजीर धानक चाउर लाउ गए' जाहि मे एकोटा चाउर

टूटल नहि हो आ ने सूड़ा होइक। हम तावत् जारन-काठो ओरियाबैत छी। भानस कऽ कऽ खा लेब तखन दूनू गोटा चलब।"

ई कहि इजोती रानी जारनि-काठी बीछय लगलीह। नौआ बात मानि गेल। ओ चल गेल बजार। नौआ केँ तँ पुरान चाउर तकैत-तकैत साँझ भए गेलैक। बारह बरख पुरान, बिनु टुटल आओर बिना सूड़ा क चाउर कतहु भेटैक? हारि-दारि कऽ साँझ कऽ बौआइत-टौआइत गाछ-तर आएल तँ देखलक सुनसान। खाली साड़ी क आँचरक दू तीन टा नोंचल चेथड़ी सब। हजमा बुझलक जे एहि वन मे इजोती रानी केँ बाघ-सिंघ खा गेल। ओहो बाँचल कोना रहैत।

ओहो बताह भए गेल। आब इजोती रानीक नाम जपैत जपैत सात टा बताह बौआय लागल।

नौआ तँ गेल छल ओमहर चाउर ताकऽ आओर इमहर इजोती रानी कयलनि की तँ अपन आँचर क एक कोन फाड़ि चीर कऽ ओहीठाम फेकि देलथिन। अपने ओहिठाम सँ पड़ा गेलीह।

कतऽ जेतीह से तँ बुझलेने रहनि। बाटो कोनो ने देखल रहनि। तैँ ओ अनभोआरे जकाँ चल जाइत हथि। जाइत-जाइत एकटा राजा क राजमे पहुँचलीह।

तावत साँझ पड़ि गेलैक। ई आ ने नगरक बाहरे में बऽड़क गाछ तर पड़ि रहलीह।

अनहार रहैक बड़ बेसी। इजोती रानी नगर दिस तकैत रहथि जे एकोटा दीप देखि पड़य मुदा से देखि नहि पड़लनि। बड़ अजगुत लगलनि हिनका। ओ एहि पर सोचऽ लगलीह। यैह सब सोचैत सोचैत आँखि ला। गेलनि।

इजोती रानीक मोन तँ चंचल रहनि। जेँ कि बऽड़क पात खड़खड़यलैक की ओ जागि गेलीह। बुझि पड़लनि जेना दुइ गोटे बात करैत हो। ओ कान पाथि कऽ सूनऽ लगलीह।

विधि आओर 'विधाता रातिमे टहलि-बूलि कऽ उड़ैत-आबि कऽ ओही गाछ पर बैसि गेलाह। विधि पुछलथिन विधाता सँ—"हे विधाता! एहि नगर मे दीप-बाती किएक ने जरैत छैक?"

विधाता कहलथिन विधिकेँ—"हें विधि! एहि नगर क राजाक बेटी बहुत दिन सँ दुखित छैक। कोनो ओषधि सँ ओकर रोग नहि छुटैत छैक। राजाकेँ एके टा बेटी। ओही सोचमे राजाक घर दीप-बाती नहि जरैत छैक। जखन राजाक धर अनहार तखन राजमे दीप कोना जरत?"

विधि पुछलथिन—"रोग छोड़ौनिहार केँ राजा देथिन की ?"

विधाता कहलथिन—"अपना बेटीसँ बिआह कऽ आधा राज दऽ देथिन ।"

विधि कहलथिन—"एँ ओ ! सभ बात तऽ कहलहुँ मुदा ओ दुख छुटतैक कोना !"

विधाता कहलथिन जे—"ई बात नहि पूछू !"

विधि जिद करऽ लगलथिन—"कहबे करू !"

विधाता करितथि की । ओ कहलथिन जे—"जाहि-ठाम राजकुमारीक पलंग छैक ओही सोझे बड़ेरी मे एकटा गड़ार छैक । ओहि गड़ार क तेल बना कऽ जँ राजकुमारी केँ देल जेतैक तँ राजकुमारी नीरोग भऽ जयतीह ।"

एते बात विधि विधाता कहि उड़ि गेलाह ।

इजोती रानी सब बात चुपचाप सुनिते रहथि । भोरे उठलीह । पुरुख क भेस बना लेलनि । सँगमे एकटा झोरामे जड़ी-बूटी सन अगरम-बगरम राखि लेलनि । ओ राजमहलक लगमे गेलीह आओर राजाकेँ समाद पठा देलथिन जे राजकुमारी क औषध करबनि ।

राजा रहथि सोचमे डूबल । निराश भेल । कहलथिन जे—"जखन एतेक अनुभवी लोक सभबुतेँ रोग नहि छुटल तखन एहि छौंड़ा बुतेँ को हेतैक ?" रानी हुनका

अबि कऽ बुझौलथिन—"के जानय ककरा हाथमे केहन यश छैक ? एक बेरि राजकुमारी केँ देखा दिऔक ओकरा सं।"

राजा मानि गेलाह। पुरुख बनल इजोती रानी राजकुमारी केँ देखि कऽ हँसि देलथिन। राजकुमारीकेँ हँसी लागि गेलैक। सब लोक देखलक। राजकुमारी पहिले बेर हँसलि छलीह एतेक दिन मे। सभक मोन हुलसि उठलैक।

इजोती रानी विधि-विधाताक कथनानुसार गड़ारक तेल बनबा कए राजकुमारी केँ लगबौलथीन्ह। राजकुमारीक रोग सब छुटि गेलैक। रोग छुटलासँ राजकुमारी पहिनहुँ सँ बेसी रूपवती भए गेलीह। सौंसे राज-परिवार खुशी सँ भरि गेल। इजोती रानी जे आब इजोतकुमार छलीह तनिक यश भऽ गेलनि। हुनकर खूब मान-दान भेल। सौंसे राज भे दीप जराकऽ दीयाबाती मनाओल गेल। राजाक बेटी नीक भऽ गेलथिन।

राजा इजोत रानी सँ परिचय पुछलथिन। ओ अपन नाम इजोतकुमार कहि परिचय देलथीन। राजा अपन बेटीक विआह हुनकासँ करय लगलाह। मुदा इजोतकुमार कहलथिन जे एखन किछु दिन विआह नहि करब। रानी सेहो आग्रह कयलखीन। एतेक धरि जे हुनका राजकुमारी

अपने सँ बिआह करय लेल कहलखीन मुदा इजोतकुमार नहि मानलथिन ।

इजोतीरानी इजोतकुमार बनल रहथि । हुनकर मोन सदिखन मलिने रहनि । लोक कखनो हुनका खुसी नहि देखनि । राजा-रानी केँ ई सभ देखि बड़ दुख होनि । राजकुमारी सेहो ओहि इजोतकुमार केँ दुखी देखथि ओ हुनका खुसी रखबा लेल चिंतित रहथि । मुदा इजोतकुमार कहि ओमोनक बात थहबे ने करथि ।

एकदिन एकटा टहलू आबि कऽ कहलकनि जे एहि राजमे सात टा बताह आएल अछि । सभ इजोती रानी क नाम जपैत अछि ।

इजोती रानी केँ बड़ कौतुहल भेलनि । ओ टहलू केँ बताह सभकेँ बजाबय लेल पठौलनि । सातो बताह सभ आएल । इजोती रानी ओकरा सभकेँ देखिते बूझि गेलीह जे ई सभ के थीक । ओ राजकुमार केँ जानि लेलनि । हुनका छोड़ि कए छबो बताहइकेँ राजक अनाथा-लय में पठा देलनि जाहिठाम राज सँ सभ भिखारिकेँ भोजन भेटैत रहैक ।

ई एकटा जे बताह छल तकर केश दाढ़ी सभ बढ़ि गेल छलैक । इजोती रानी हजामकेँ बजबा कऽ केश सब बनबौलनि । नहा सोना कऽ नीक कपड़ा पहिरौलथिन ।

येह बताह इजोती रानीक राजकुमार पति छलथिन । राजकुमार मुदा इजोतकुमार के भेस मे इजोती रानी के नहि चिनहलथिन ।

इजोती रानी राजाकेँ बजा कऽ ओही राजकुमार सँ राजकुमारी क बिआह कऽ देबा लेल कहलथिन । पहिने राजाकेँ ई बात नहि नीक लगलनि । रानी आओर राजकुमारीकेँ सेहो ई बात नीक नहि लगलनि । तखन इजोती रानी राजाकेँ सभ बात कहलथिन आ ओर इजोतकुमारक भेस छोड़ि कऽ असल रानी बनि कऽ घोघ-मोघ तानि कऽ बैसि रहलीह । आब जा कऽ राजकुमार बुझलनि जे येह थिकीह इजोती रानी ।

राजा सब बात बूझि गेलाह आओर खुसी खुसी राजकुमार सँ अपना बेटी क बिआह कऽ कऽ आधा राज दऽ देलथिन । राजकुमार अपन दुनू कनिआ इजोती रानी आओर राजकुमारीक संग बाजा बजबैत अपन राज अएलाह । राजकुमार क भौजी हँसैत हुनकर पड़िछनि कयलथिन । दुनू कनिआ क मुख देखि, सुन्दरताइ देखि कऽ नगर क लोक छकित भऽ गेल ।

सभ गोटे सुखसँ रहय लगलाह ।

[समाप्त]

• मातृभाषा मैथिलीक सेवा •

सचित्र 'बटुक' मासिक

१ एलनगंज रोड, इलाहाबाद—२

सम्पादक : डा० श्रीसुधाकान्तमिश्र

सचित्र बाल-मासिक जे गत तेरह वर्षसँ बरोबरि नियमित रूपें प्रकाशित भए रहल अछि। आइए पाँच टाका मनिआडर सँ पठाए वार्षिक ग्राहक बनू एवं विशेषांक, उपहार, पुरस्कार प्राप्त करू !!

अँग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी एवं

मातृभाषा मैथिलीक सम्पूर्ण साहित्य

तीरभुक्ति-प्रकाशन

इलाहाबाद—२

सँ प्राप्त भए सकैछ। मैथिली ग्रन्थ-सूची एवं अँग्रेजी ग्रन्थ-सूची निःशुल्क मँगाबी। मैथिली क प्रत्येक प्रकाशित पुस्तक एवं पत्र-पत्रिका लेल आइए आर्डर पठाबी। मासिक 'बटुक' क ग्राहक, शिक्षण संस्था एवं पुस्तक विक्रेता कें विशेष कमीशन !